सफलता की कहानी

प्रखण्ड– पालकोट

समेकित कृषि प्रबंधन

बढ़ती जनसंख्या, पारिवारिक बंटवारे से घटती खेती की जोत और कृषि के लिये प्रमुख साधनों की बढ़ती कीमतों से हमारी कृषि मुनाफा के बजाय नुकसान देने लगी है। कृषि में नवीकरण की दौड़ में हमारी प्रगति तो हुई इसमें कोई शंका नहीं, परन्तु लाभकारी खेती में हम पिछड़ गये।

तब जाकर हमें हमारी कृषि की पुरानी पद्धति याद आई जिसमें हम खेती के अलावा मुर्गीपालन, उद्यानिकी, मछलीपालन, मधुमक्खीपालन, मशरूम उत्पादन से अतिरिक्त आय भी प्राप्त कर सकते है। इन्हीं बातों को धरातल पर उतारा जिला–गुमला, प्रखण्ड पालकोट के युवक कृषक विक्रम सिंह, पिता –सुदेश्वर सिहं, ग्राम– लिटिम पंचायत–उमड़ा मोबाइल संख्या– ८६६६९७४८३ के निवासी । ये खेती के साथ–साथ मुर्गीपालन, मत्स्य पालन उद्यानिकि से अच्छा मुनाफा कमा रहें है। खेती के लिये इनके पास ४–५ एकड़ रकबा है। ये धान के अलावा सब्जी की खेती जैसे–टमाटर, आलु, लत्तरवर्गीय फसल की खेती करते है। साथ ही साथ मडुवा, उरद की खेती भी करते है।

उन्होंने बताया की उन्होंने कड़कनाथ के ३०० चूजे, ५०/– रूप्ये की दर से खरीदा।

रानीखेत रोग से बचाव के लिये लसोटा के लिये वे घर पर ही उपलब्ध मड़वा एवं चावल का दर्रा देते है। परिवार के सभी लोग मुर्गियों की देखभाल करते है, जिसके कारण श्रम लागत नहीं के उपरांत आता है। वर्त्तमान में वे लगभग १०० मुर्गियाँ ३-४ महीने के अंदर १००० - १५०० रू० तक ब्रिक्री कर चुके है। प्रोटीन ज्यादा एवं औषधीय गुण होने के कारण बाजार में जल्दी खपत कर रहें है। इनके बिक्री दर की बात करें तो लगभग ये १०,०००-१५,०००/- रू० में बिक्री होगी। उन्होंने बताया की इन्होंने लगभग पपीता के ५०० पौधे प्रभेद रेड लेडी -७८६, ४०रू० प्रति पौधे की दर से बिक्री कर अच्छा मुनाफा कमाया है। इनके पास एक तालाब है, जिसका आकार १ एकड. का है। जिसमें वे अभी झिंगा, मिरगा आदि का पालन कर रहें है। शरद ऋतु के खत्म होने के बाद वे मछली बिक्री की योजना बना रहें है, जिसमें अच्छा मुनाफा प्राप्त करने में सक्षम होंगे। बातचीत के दौरान उन्होंने बताया कि कृषि विभाग एवं आत्मा की ओर से समय-समय पर प्रशिक्षण प्राप्त कर खेती के नये गुर सीख रहें है। उन्होंने जानकारी दी कि वर्त्तमान में १०-१२ मधुमखी बक्से को सरसों के खेत में लगाते की तैयारी कर रहे है, जिसका प्रशिक्षण वे के०वी०के० विशुनपुर से प्राप्त किये हैं।

सभी को मिलाकर शुद्ध मुनाफा की बात की जाय तो वे अभी तक मुर्गीपालन से ही मात्र ८०-९० हजार प्राप्त कर चुके है। खेती से ४०-५० हजार, मत्स्य पालन से ५०-६० हजार का आमदनी होने का अनुमान है। तो देखा जाय तो इनके द्वारा सलाना ३.५-४ लाख तक की आय प्राप्त कर सकेंगे। उन्होंने बताया कि कम भूमि में सिर्फ खेती लाभकारी नहीं हो सकती, अगर वे खेती के अलावा, पशुपालन, मछली पालन, मुर्गीपालन आदि भी करें, तो सफलता हाथ जरूर लगती है।